सीखने–सिखाने में प्रश्न पूछने के मायने

पूजा आर्या

सार्थक प्रश्न पूछना और विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के अवसर देना सीखने को अधिक गहन, भागीदारीपूर्ण और रचनात्मक बनाता है। साथ ही, यह शिक्षक के लिए विद्यार्थियों के सीखने की स्थितियों को समझने और उन्हें बेहतर बनाने का एक ज़रिया भी है।

सुबह का समय था। दूसरी कक्षा के विद्यार्थी अपनी कक्षा में ज़मीन पर एक घेरे में बैठे थे। शिक्षिका कक्षा में आईं और उन्होंने बिना कुछ कहे एक घेरे के बीच सूखी पत्ती रख दी। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि उसे ध्यान से देखें। पर्यावरण अध्ययन के इस पाठ की शुरुआत पाठ्यपुस्तक या परिभाषाओं की मदद से करने के बजाय उन्होंने प्रश्न पूछा :

"आपको क्या लगता है कि यह पत्ती पेड़ से क्यों गिरी?"

कक्षा तुरन्त हरकत में आ गई, और विद्यार्थियों में उत्साह भर गया।

"क्योंकि यह सूख गई थी।"

"शायद तेज़ हवा चली होगी!"

"यह पुरानी हो गई थी।"

"मेरी दादी कहती हैं कि नई पत्तियों के आने से पहले पुरानी पत्तियाँ गिर जाती हैं।"

फिर तो विद्यार्थी आपस में बातें करने लगे, अपने विचारों की तुलना करने लगे, और याद करने लगे कि उन्होंने अपने घरों के आस-पास और विद्यालय के मैदान में क्या देखा था। कुछ विद्यार्थी कन्नड़ में बोल रहे थे, वहीं कुछ हिन्दी और अँग्रेज़ी मिलाकर बोल रहे थे। एक विद्यार्थी ने पत्ती उठाई और धीरे से कहा, "शायद अब पेड़ को इसकी ज़रूरत नहीं है!"

उस समय, कक्षा सिर्फ़ शिक्षिका के प्रश्न का उत्तर नहीं दे रही थी, बल्कि विद्यार्थी देख रहे थे, सोच रहे थे, कल्पना कर रहे थे, चीज़ों को आपस में जोड़ रहे थे, चर्चा कर रहे थे, और साथ मिलकर सीख रहे थे।

यही है प्रश्न पूछने की ताक़त।

'सही उत्तर' से परे जाकर प्रश्न पूछना

अकसर कई कक्षाओं में प्रश्न सिर्फ़ इसलिए पूछे जाते हैं ताकि यह पता लग सके कि विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक की जानकारी याद हुई है या नहीं।

इस प्रश्न का उत्तर क्या है; कौन बता सकता है; हमने कल क्या पढ़ा था; आदि जैसे प्रश्नों की अपनी अहमियत है। लेकिन जब कक्षा में सिर्फ़ जानकारी पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं तब हो सकता है कि सीखना सिर्फ़ रटने तक सीमित रह जाए। अकसर कुछ ऐसे विद्यार्थी ही उत्तर देते हैं जिनमें आत्मविश्वास होता है, बाक़ी चुप ही रहते हैं।

प्रश्न पूछने का मतलब सिर्फ़ सही उत्तर की जाँच करना नहीं होता, यह इससे कहीं बढ़कर हो सकता है।

- यह पढ़ाने की एक रणनीति हो सकती है।
- रचनात्मक आकलन का एक तरीक़ा हो सकता है।
- सभी विद्यार्थियों को अपनी बात रखने और निर्णय लेने की आज़ादी देने का एक ज़रिया हो सकता है।
- भागीदारी और बातचीत का एक साधन हो सकता है।

चित्र 1 : पूछे गए प्रश्न का उत्साहपूर्वक जवाब देती छात्रा

जब हम विद्यार्थियों से सोच-समझकर और सार्थक प्रश्न पूछते हैं तो ये उन्हें गहराई से सोचने, विषयों को बेहतर ढंग से समझने, अपनी उत्सुकता ज़ाहिर करने, सही अन्दाज़ा लगाने, विभिन्न चीज़ों के बीच सम्बन्ध जोड़ने, और दूसरों के विचारों के साथ सम्मान के साथ असहमति जताने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

पढ़ाने के तरीक़े के रूप में प्रश्न पूछना

शिक्षण प्रक्रियाओं के दौरान प्रश्न पूछना शिक्षकों के सबसे प्रभावशाली और असरदार पढ़ाने के तरीक़ों में से एक माना जाता है। एक सार्थक प्रश्न जिज्ञासा जगाने, बातचीत को बढ़ावा देने, और विद्यार्थियों को कक्षा में सीखी हुई बातों को रोज़मर्रा के अनुभवों से जोड़ने में मदद कर सकता है।

उदाहरण के लिए, गणित की कक्षा 4 में, 'हासिल वाले घटाव' को सीधे समझाने के बजाय, शिक्षक बोर्ड पर लिखते हैं, "आपके पास 100 रुपए हैं। आप 78 रुपए का सामान ख़रीदते हैं। कैसे पता लगाएँगे कि आपके पास कितने रुपए बचे हैं?"

विद्यार्थी अलग-अलग तरह से उत्तर देना शुरू करते हैं, "मैं 100 में से 78 घटाऊँगा"; "मैं पहले 70 घटाऊँगी"; "मैं 78 से आगे गिनूँगा"; "मैं अपनी उँगलियों का इस्तेमाल कर सकती हूँ"; आदि। अब तुरन्त 'सही' तरीक़ा बताने के बजाय, शिक्षक कुछ और प्रश्न पूछते हैं। जैसे–

"क्या एक प्रश्न को हल करने के अलग-अलग तरीक़े हो सकते हैं?" या "आपको क्यों लगता है कि आपका तरीक़ा सही है?"

धीरे-धीरे, कक्षा का माहौल सिर्फ़ उत्तर खोजने तक सीमित न रहकर तरीक़ों, तर्क और समझ पर बातचीत करने की दिशा में बढ़ने लगता है।

कक्षाओं में प्रश्न पूछना ही पढ़ाने का तरीक़ा बन जाता है। सोच-समझकर पूछे गए प्रश्न विद्यार्थियों की पहले से मौजूद जानकारी या पूर्व ज्ञान को सक्रिय करने, जिज्ञासा बढ़ाने, भागीदारी को बढ़ावा देने, और अवधारणा की समझ को गहरा करने में मदद करते हैं। ऐसे प्रश्न विद्यार्थियों को अपनी सोच बताने, दूसरों की बात सुनने और पाठ को अपने अनुभवों से जोड़ने के मौक़े भी देते हैं। जब कक्षा का माहौल केवल एकतरफ़ा निर्देश देने तक सीमित न रहकर बातचीत, सोच-विचार और चर्चाओं का एक सक्रिय केन्द्र बन जाता है तब विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में पहले से कहीं अधिक सक्रियता और गहनता से हिस्सा लेने लगते हैं।

रचनात्मक आकलन की प्रक्रिया के दौरान प्रश्न पूछना

प्रश्न पूछने से शिक्षिका को कक्षा में होने वाली गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को लगातार समझने में मदद मिलती है। इसे रचनात्मक आकलन कहते हैं। यह ऐसा आकलन है जो सीखने की प्रक्रिया के साथ-साथ उसे बेहतर बनाने में मदद करता है।

उदाहरण के लिए, कहानी पढ़ते समय शिक्षिका पूछती हैं, "तुम्हें क्या लगता है कि लड़के ने चिट्ठी क्यों छिपाई?"

> **जिस कक्षा में विद्यार्थियों की अपनी सोच और पहल को अहमियत दी जाती है, वहाँ वे खुलकर प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।**

कुछ विद्यार्थी आत्मविश्वास के साथ उत्तर देते हैं। कुछ को अपनी बात समझाने में मुश्किल होती है। एक विद्यार्थी कहता है–

"क्योंकि वह डरा हुआ था।"

शिक्षिका आगे पूछती हैं, "कहानी में ऐसी कौन-सी बात है जिससे तुम्हें लगा कि वह डरा हुआ था?"

अब यहाँ शिक्षिका सिर्फ़ यह नहीं जान रही हैं कि विद्यार्थियों को कहानी पता है या नहीं। वे यह भी समझ पा रही हैं कि क्या वे भावनाओं को समझ सकते हैं, कहानी में दिए गए संकेतों का इस्तेमाल कर सकते हैं, और अपने तर्क दे सकते हैं।

इसी तरह, विज्ञान की कक्षा में अगर विद्यार्थी कहते हैं कि पौधे मिट्टी खाते हैं, शिक्षिका तुरन्त उनकी उस दुविधा को समझ जाती हैं जिस पर और चर्चा करने की ज़रूरत है।

और तब प्रश्न पूछने के ज़रिए, शिक्षिका ये बातें समझ सकती हैं–

- विद्यार्थी पहले से क्या जानते हैं?
- उन्हें कौन-सी चीज़ें भ्रमित करती हैं?
- वे कैसे सोच रहे हैं?
- कौन-से विद्यार्थी हिस्सा ले रहे हैं?
- किन विद्यार्थियों को मदद की ज़रूरत है?
- क्या शिक्षक के पढ़ाने के तरीक़े काम कर रहे हैं?

इस अर्थ में, आकलन सिर्फ़ टेस्ट, अंकों या वर्कशीटों तक ही सीमित नहीं है। कक्षा में रोज़ होने वाली चर्चा भी आकलन का अवसर प्रदान कर सकती है।

प्रश्नों के ज़रिए विद्यार्थियों को अपनी बात रखने में सक्षम बनाना

- अकसर कक्षा में प्रश्न पूछने का काम शिक्षक के नियंत्रण में होता है। वे प्रश्न पूछते हैं, और विद्यार्थी उत्तर देते हैं। लेकिन असल भागीदारी तब बनती है जब विद्यार्थी ख़ुद भी प्रश्न पूछने लगते हैं।
- विद्यार्थियों के प्रश्न उनकी उत्सुकता, कल्पनाशीलता और जुड़ाव को दिखाते हैं। फिर भी कई विद्यार्थी प्रश्न पूछने से हिचकिचाते हैं क्योंकि उन्हें डर होता है कि लोग उन पर हँसेंगे, उन्हें टोकेंगे या नज़रअन्दाज़ कर देंगे। जिस कक्षा में विद्यार्थियों की अपनी सोच और पहल को अहमियत दी जाती है, वहाँ वे खुलकर प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।
- पाँचवीं कक्षा में, प्रवासन, यानी एक जगह से दूसरी जगह जाकर बस जाना, के बारे में एक पाठ पढ़ने के बाद, एक

विद्यार्थी ने पूछा, "लोग अपने गाँव क्यों छोड़ देते हैं, भले ही उनकी इच्छा न हो?" शिक्षिका ने पाठ को बीच में रोककर चर्चा शुरू की। फिर क्या था, विद्यार्थियों ने शहरों में काम करने वाले माता-पिता, मौसमी काम और सूखे के समय परिवार के दूसरी जगह बस जाने जैसी बातें बतानी शुरू कर दीं। यह बातचीत और भी प्रभावी इसलिए रही क्योंकि कक्षा में केवल पाठ्यपुस्तक को ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के प्रश्नों को भी महत्त्व दिया गया। विद्यार्थियों को अपनी राय व्यक्त करने की स्वतंत्रता देने पर यह बात भी समझ में आती है कि वे केवल जानकारी प्राप्त करने वाले निष्क्रिय श्रोता नहीं हैं। वे स्वयं सोचने, समझने और अर्थ निकालने की क्षमता रखते हैं।

विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए बढ़ावा देने के कुछ उपाय

- विद्यार्थियों के प्रश्नों की तारीफ़ करना;
- उन्हें अपने साथियों के लिए प्रश्न बनाने देना;
- उन्हें जोड़ी में चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करना;
- 'प्रश्न की दीवार' या 'जिज्ञासा का कोना' बनाना;
- उनके विभिन्न प्रकार के उत्तरों का स्वागत करना;
- विद्यार्थियों को उनकी सोच के बारे में बताने को कहना;
- उन्हें सम्मान के साथ असहमति जताने के लिए प्रोत्साहित करना; आदि।

जब विद्यार्थियों को लगता है कि उनके प्रश्नों को अहमियत दी जा रही है, भागीदारी अपने-आप बढ़ जाती है।

कक्षा में प्रश्न पूछना और सोचने के लिए समय देना

हालाँकि, विद्यार्थी अकसर उत्तर देने से हिचकिचाते हैं क्योंकि उन्हें 'ग़लत' उत्तर देने का डर होता है, या वे तुरन्त उत्तर देने में दबाव महसूस करते हैं। कक्षा में सार्थक प्रश्न-उत्तर का मतलब सिर्फ़ प्रश्न पूछना नहीं, बल्कि एक ऐसा वातावरण बनाना भी है जहाँ विद्यार्थी सोचने, विचार करने और उत्तर देने में सहज महसूस करें।

उदाहरण के लिए, मौसम पर चर्चा के दौरान, कोई विद्यार्थी कह सकता है, "आज सूरज बादलों के पीछे छिपा हुआ है।" शिक्षक इस बात को आधार बनाकर कह सकते हैं, "हाँ, ऐसा ही लग रहा है, है न? सूरज तो वहीं है, लेकिन बादल उसकी थोड़ी-सी रोशनी को रोक रहे हैं। जब सूरज बादलों से ढँका होता है तो आपको क्या फ़र्क़ नज़र आता है?" इसके बाद शिक्षक 'सूरज की रोशनी', 'बादलों का छा जाना' और 'तापमान' जैसे विषयों पर बात कर सकते हैं।

इस तरह, शिक्षक विद्यार्थी की रोज़मर्रा की भाषा और देखी-समझी बातों का इस्तेमाल करते हुए उन्हें धीरे-धीरे ज़्यादा औपचारिक वैज्ञानिक अवधारणा की ओर ले जाते हैं। इस तरह की क्रियाएँ विद्यार्थियों की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं, उनके विचारों को महत्त्व देती हैं, और अपने विचार व्यक्त करने में उनका आत्मविश्वास बढ़ाती हैं।

सोचने के लिए समय देना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। अकसर होता यह है कि शिक्षक प्रश्न पूछते हैं, और तुरन्त उत्तर पाने की उम्मीद करते हैं। ऐसा करने से केवल कुछ ही विद्यार्थी जल्दी उत्तर दे पाते हैं, और बाक़ी चुप रहते हैं।

प्रश्न पूछने के बाद कुछ क्षणों का समय देने से कक्षा में भागीदारी अधिक समावेशी हो सकती है। इससे सभी विद्यार्थियों, विशेषकर कम बोलने वालों, को अपनी गति से सोचने और उत्तर देने का अवसर मिलता है। समय के साथ, विद्यार्थी अपने विचार साझा करने, प्रश्न पूछने और चर्चाओं में भाग लेने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करने लगते हैं।

जब सोच-समझकर प्रश्न पूछने के साथ-साथ सोचने के लिए पर्याप्त समय भी दिया जाता है तो कक्षाएँ अधिक सहयोगी, चिन्तनशील और भागीदारीपूर्ण बन जाती हैं। इस तरह के तरीक़ों से न केवल प्रतिक्रियाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी को कक्षा में अपनी बात रखने का अवसर मिले।

प्रश्न और उत्तर को सार्थक बनाने के लिए कुछ उपयोगी तरीक़े

- 'क्यों' और 'कैसे' वाले प्रश्न अधिक पूछना;
- एक से ज़्यादा उत्तर देने के लिए बढ़ावा देना;

चित्र 2 : बिना संकोच के शिक्षिका से सवाल पूछती छात्रा

- उत्तर देने के पहले सोचने के लिए समय देना;
- प्रश्नों को स्थानीय अनुभवों से जोड़ना;
- विद्यार्थियों को आपस में प्रश्न पूछने के लिए बढ़ावा देना;
- विद्यार्थियों की कोशिश और जिज्ञासा की तारीफ़ करना;
- अलग-अलग भाषाओं में बातचीत करने की छूट देना;
- ऐसा माहौल बनाना जिसमें विद्यार्थी बिना डरे, खुलकर प्रश्न पूछ सकें; आदि।

विद्यार्थियों को प्रश्न बनाने के लिए प्रोत्साहित करें : एक गतिविधि

कोई कहानी, पाठ या गतिविधि पूरी होने के बाद, विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूहों में बाँट दें। उनसे कहें कि आज वे सिर्फ़ उत्तर देने वाले नहीं, बल्कि 'प्रश्न बनाने वाले' बनेंगे।

हर समूह को पाठ से जुड़े अलग-अलग तरह के प्रश्न तैयार करने के लिए कहें। जैसे–

- ऐसा प्रश्न जो हमें याद रखने में मदद करे;
- ऐसा प्रश्न जो हमें सोचने पर मजबूर करे;
- 'क्यों' या 'कैसे' वाला प्रश्न;
- रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ा प्रश्न;
- ऐसा प्रश्न जिसके एक से ज़्यादा उत्तर हो सकते हों; आदि।

विद्यार्थियों को आपस में चर्चा करने और प्रश्न तैयार करने के लिए समय दें।

ऐसा करने पर शिक्षक देख पाएँगे कि जो विद्यार्थी आमतौर पर चुप रहते हैं, वे अब अधिक आत्मविश्वासी और सक्रिय हो गए हैं क्योंकि अब उन्हें केवल प्रश्नों के उत्तर देने के बजाय स्वयं प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

इस गतिविधि से विद्यार्थियों को यह समझने में मदद मिलती है कि सीखना सिर्फ़ सही उत्तर देना नहीं है। सोच-समझकर प्रश्न पूछना, दूसरों की बात सुनना और अलग-अलग विचारों पर चर्चा करना भी सीखने का अहम हिस्सा है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

पूजा आर्या अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में फ़ैकल्टी हैं। वे भारत के विभिन्न राज्यों और विभिन्न स्कूल बोर्डों में शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों के साथ मिलकर काम करती हैं। उनका काम भाषा शिक्षण पद्धति और शैक्षिक आकलन पर केन्द्रित है।

सम्पर्क : pooja.arya@apu.edu.in